International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 05-03-2022, Accepted: 22-03-2022, Published: 06-04-2022
Volume 8, Issue 2, 2022, Page No. 74-76

भारत–अमेरिका संबंधों का इतिहास

नमिता धान
शोधार्थी, राजनीतिक विज्ञान विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखंड, भारत

सारांश
भारत और अमेरिका विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश है, जिसमें काफी समानताएँ भी है। आजादी के बाद से दोनों देशों के संबंधों में काफी उतार–चढ़ाव आये हैं। भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाया जिसके कारण अमेरिका भारत से नाराज रहा और अमेरिका अपनी विदेश नीति में पाकिस्तान को महत्व दिया। भारत को नजरअंदाज करते रहा। भारत ने सदैव ही अमेरिका से संबंधों को मधुर व मित्रतापूर्ण बनाने का भरसक प्रयास किया लेकिन अमेरिका ने भारतीय हितों को प्राथमिकता नहीं दी। इस पेपर का उद्देश्य भारत–अमेरिका के संबंध इतिहास में कैसा था ? इस पर प्रकाश डाला गया है।

मूल शब्दः भारत–अमेरिका, संबंधों, इतिहास

प्रस्तावना
प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली के रूप में कुछ समानताएँ रखने वाले तथा ब्रिटिश उपनिवेशवाद का शिकार रह चुके भारत और अमेरिका के संबंध अधिक मधुर नहीं रहे हैं। इसका प्रमुख कारण भारत की गुटरिपेक्षता तथा सैनिक संगठन विरोध दृष्टिकोण माना जाता है। प्रारंभ से ही अमेरिका की विदेश–नीति पाकिस्तान समर्थक तथा भारत विरोधी रही है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद एक महान शक्ति के रूप में उभरने वाले अमेरिका का ध्येय भारत को अपने गुट में मिलाना था, लेकिन भारत ने स्पष्ट किया कि वह किसी गुट में शामिल न होकर स्वतंत्र विदेश नीति अपनाएगा। गुटनिरपेक्षता की नीति इसी का परिणाम थी। इसी नीति के आधार पर भारत ने अमेरिका के साथ–साथ अन्य देशों से भी मधुर संबंध स्थापित करने के साथ मधुर सम्बन्धों को प्राथमिकता नहीं दी। अमेरिका ने प्रायः भारत की गुटनिरपेक्षता को सोवियत समर्थक नीति के रूप में देखा। इसी कारण दोनों देशों के संबंध उलझन भरा बने रहे। स्टेनली हाफमैन ने लिखा है ''सभी प्रमुख देशों में से भारत ही एक ऐसा देश है जिसके साथ संयुक्त राज्य अमेरिका के संबंध उलझन पैदा करने वाले रहे हैं। कई विद्वानों ने तो भारत–अमेरिका संबंधों को ''अमैत्रीपूर्ण मित्रों'' के संबंध माना है इसका प्रमुख कारण यह भी है कि अमेरिका ने अपने राष्ट्रीय हितों को अधिक महत्व दिया और भारत को एक अधीनस्थ राष्ट्र के रूप में देखा। उसने कभी भी भारतीय दृष्टिकोण को समझने और उसके राष्ट्रीय हितों को अधिक महत्व नहीं दिया और उस पर ध्यान देने की नहीं सोची। भारत अमेरिका सम्बन्धों में एनपीटी, सीटीबीटी 1971 की भारत सोवियत मैत्री, भारत–पाक संघर्ष आदि को लेकर प्रायः तनाव ही रहा है। इस संदर्भ में अमेरिका ने पाकिस्तान का ही पक्ष लिया है। परन्तु शीत युद्ध के बाद भारत के प्रति अमेरिका द्वारा सकारात्मक रूख अपनाये जाने से मधुर सम्बन्धों का प्रथम अध्याय शुरू हुआ है दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों की नई शुरूआत तथा 1990 की प्रत्यावर्तन संधि आतंकवाद का उन्मूलन करने में अमेरिका द्वारा भारत का सहयोग शिक्षा व संस्कृति का आदान–प्रदान ऐसे तथ्य है जो भारत – अमेरिका सम्बन्धों में सुधार की आशा करते हैं।

भारत–अमेरिका सम्बन्धों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
भारत–अमेरिका के संबंधों का पुराना इतिहास देखने पर पता चलता है कि दोनों देशों के बीच 200 वर्षों से भी अधिक समय से व्यापारिक संबंध चले आ रहे हैं।

भारत की स्वतंत्रता से 1954 तक भारत–अमेरिका संबंध
1946 में भारत अमेरिका कूटनीतिक सम्बन्धों कर नया अध्याय शुरू होने से यह आशा प्रबल हुई कि स्वतंत्रता के बाद भारत–अमेरिका निर्मूल साबित हुई। जब भारत ने अमेरिकी गुट में शामिल ना होकर स्वतंत्र विदेश नीति संचालित करने का संकल्प किया। अमेरिका ने भारत को विरोधी की दृष्टि से देखना शुरू कर दिया। इसलिए इस काल में भारत–अमेरिका सम्बन्ध संदेहास्पद स्थिति में शुरू हुए। इसका प्रमुख कारण दोनों देशों में अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवाद और उपनिवेशवाद के प्रति पाया जाने वाला पृथक–पृथक दृष्टिकोण था। भारत सोवियत संघ को भी नाराज नहीं करना चाहता था। उसकी विदेश नीति का ध्येय अमेरिका तथा सोवियत संघ दोनों देशों से मित्रता बनाए रखना था। जबकि अमेरिका सोवियत संघ द्वारा प्रायोजित साम्यवाद को अपने लिए सबसे बड़ा खतरा मानता था। वह भारत की सोवियत संघ के प्रति अपनाई गई विदेश नीति को समर्थक के रूप में सहन नहीं कर सका था। दूसरा कारण यह भी था कि भारत उपनिवेशवाद का प्रबल विरोधी था इसके विपरीत अमेरिका नए रूप में साम्राज्यवाद का पोषण कर रहा था। इस बात को लेकर भी दोनों देशों के संबंध में खराब हो गए जब भारत ने किसी भी गुट में शामिल होने से मना कर दिया। अमेरिका ने भारत पर आरोप लगाया कि वह अर्द्ध–साम्यवादी है जो अपनी गुटनिरपेक्षता को धीरे–धीरे साम्यवाद की तरफ मोड़

रहा। इस तरह दोनों देशों के बीच दरार पैदा हो गई थी। भारत द्वारा सैनिक गुटों का विरोध तथा उपनिवेशवाद के अन्त के लिए तृतीया विश्व को एक मंच पर लाने के लिए प्रयासरत रहना ही इसके प्रमुख कारण थे।

1955 से 1971 तक भारत–अमेरिका सम्बन्ध इस युग में शुरूआती रूप में भारत–अमेरिकी संबंधों में सहयोग की प्रक्रिया आगे बढ़ी जिसकी वजह से अमेरिका का भारत के प्रति दृष्टिकोण बदला। स्टालिन की मृत्यु के बाद खुश्चेव द्वारा तृतीया विश्व के प्रति अपनाई गई शान्तिपूर्ण–सहअस्तित्व की नीति में बदलाव लाना ही श्रेयकर समझा। इसलिए उसने अपनी विदेश नीति में बदलाव लाकर भारत को बहुत बड़ी मात्रा में आर्थिक सहायता प्रदान करना शुरू कर दिया ताकि साम्यवाद के बढ़ते बेग को रोका जा सके। इसमें राष्ट्रपति कैनेडी ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उसने भारत–चीन युद्ध में भारत का ही पक्ष लिया और उसकी गुटनिरपेक्षता की नीति की सराहना की। अब अमेरिका दक्षिण–एशिया में भारत का महत्व समझने लगा तथा उसे सैन्य व आर्थिक सहायता देने पर सहमत हो गया। उसने कश्मीर मुद्दे पर भी अपना रूख कुछ नरम किया। वस्तुतः इस काल में पाकिस्तान को अमरीकी शस्त्रास्त्रों की आपूर्ति, पश्चिमी एशिया संघर्ष, वियतनाम में अमेरिकी हस्तक्षेप, हिन्द महासागर में अमेरिका का बढ़ता दबाव व दक्षिण एशिया में भारत व अमेरिका की परस्पर विरोधी नीति आदि को लेकर भारत और अमेरिका के बीच तनावपूर्ण संबंध बने रहे। इसलिए इसे 'प्रबल विरोध' का युग कहा जाता है। इस युग में 'भारत–सोवियत मैत्री' (1971) ने भी भारत – अमेरिका संबंधों को बिगाड़ की तरफ लाकर रख दिया।

1972 से 1979 तक भारत–अमेरिका संबंध

1971 के भारत–पाक युद्ध के कारण भारत–अमेरिका संबंधों को सुधारने के लिए अमेरिका ने पहल की। फरवरी 1972 में राष्ट्रपति निक्सन ने कांग्रेस में बोलते हुए कहा कि ''वह भारत से संबंध सुधारने का इच्छुक है। लेकिन यह इस बात पर निर्भर करता है कि दक्षिण एशिया का यह शक्तिशाली देश अपने पड़ोसियों के प्रति कैसा रूख अपनाता है।'' लेकिन 1972 में जब अमेरिका ने पाकिस्तान को सैनिक सहायता देने की बात की तो भारत ने इसका प्रबल विरोध किया। इससे दोनों देशों में संबंध सुधार की आशा निर्मूल प्रतीत होने लगी। 1972 में अमेरिका के राष्ट्रपति चीन की यात्रा पर गए और वापिस आकर संयुक्त विज्ञप्ति में पाकिस्तान क्षेत्र से भारतीय सेना की वापसी तथा जम्मू–कश्मीर की जनता के आत्म–कश्मीर की जनता के आत्म–निर्णय के अधिकार की मांग की। इसके बाद मार्च 1973 में अमेरिका ने जब पाकिस्तान को आर्थिक और सैनिक मदद देना शुरू कर दिया तो भारत ने इसकी आलोचना की। अमेरिका द्वारा हिन्द महासागर ने ब्रिटिश अधिकृत डियोगो गर्सिया में अपना नौसैनिक अड्डा स्थापित करने के निर्णय से 1974 में भारत–अमेरिकी संबंधों में कटुता आ गई। उसके बाद जब भारत में 1974 में पोखरण परमाणु विस्फोट किया तो अमेरिका ने इसकी काफी आलोचना की। फरवरी 1975 में अमेरिका ने पाकिस्तान को मिसाईल, बम–वर्षक व अन्य शस्त्रास्त्र देने का निर्णय किया तो भारत ने इसे अमैत्रीपूर्ण कार्य बताया। अपनी गलती को सुधारने के लिए अमेरिका ने जल्दी ही भारत के साथ वार्त्ताये शुरू कर दी वह अच्छी तरह जानता था कि भारत का सोवियत संघ की तरफ बढ़ता रूझान दक्षिण एशिया में उसके हितो की प्राप्ति में अवश्य बाधक होगा। इसलिए अपने विदेश सचिव हेनरी किर्सिजर को नई दिल्ली भेजा। इस अवसर पर अतीत की भूलों और 'परस्पर अविश्वास' के कारण उत्पन्न खराब संबंधों की खाई में जनता दल की सरकार बनने के बाद अमेरिका के राष्ट्रपति जिमी कार्टर ने आशा व्यक्त की, कि अब भारत–अमेरिका सम्बन्धों का नया अध्याय शुरू होगा। जिमी कार्टर जनवरी 1973 में भारत की यात्रा पर आए और भारत को दिया जाने वाला आर्थिक सहयोग बढ़ाने का आश्वासन दिया। इसी वर्ष जून 1978 में भारत के प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई, अमेरिका के राष्ट्रपति कार्टर के निमत्रंण पर अमेरिका गये। इस अवसर पर अमेरिका ने भारत के तारापुर परमाणु बिजलीघर को ईंधन देने तथा परमाणु क्षेत्र में सहयोग करने का वचन दिया। इससे दोनों देशों के बीच तनाव व शंका कुछ कम हुआ। जब अमेरिका ने अफगानिस्तान संकट के समय 1979 में पाकिस्तान को सैनिक सहायता देना शुरू किया तो इससे भारत–अमेरिकी संबंधों में तनाव पैदा हो गया। इस तरह यह युग अच्छे और खराब दोनों तरह के मिश्रित संबंधों का काल रहा।

1980 से शीत युद्ध की समाप्ति तक भारत–अमेरिका संबंध

1980 का वर्ष भारत–अमेरिका संबंधों में बदलाव व सहयोग की उम्मीद लेकर आया। इस वर्ष इंदिरा गांधी द्वारा भारत के सत्ता पुनः संभालने पर दोनों देशों में मधुर संबंधों का नया अध्याय शुरू हुआ। अक्टूबर 1980 में भारत के विदेश मंत्री नरसिन्हा राव संयुक्त राष्ट्र महासभा के सम्मेलन में अमेरिका के विदेश मंत्री एडमण्ड मस्की से मिले और कई मसलों पर बातचीत की। उसके बाद अक्टूबर, 1981 के कानकुन सम्मेलन में उत्तर–दक्षिण वार्ता, भारत की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने अमेरिकन राष्ट्रपति रीगन से भेंट की। इस भेंट के बाद दोनों देशों के दृष्टिकोण में कुछ परिवर्तन दिखाई दिया और संबंधों में सुधार की आशा दिखाई देने लगी। इस समय दोनों देशों में तारापुर परमाणु संयंत्र के लिए परिष्कृत यूरेनियम की आपूर्ति के बारे में एक समझौता हुआ। 1982 में भारत अमेरिका सम्बन्धों ने सुधार की दृष्टि से नवबंर महीने में विदेश सचिव स्तर की वार्त्ता महत्वपूर्ण मानी गई 1983 में ही भारत अमेरिका संयुक्त आयोग की बैठक में भी पारस्परिक सहयोग पर काफी विचार विर्मश हुआ। 15 मई 1984 को अमेरिकी उप–राष्ट्रपति जार्ज बुश ने भारत की यात्रा की। इसी वर्ष भारत के वाणिज्य मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह वांशिगटन गए। इस तरह दोनों देशों में राजनयिक व कूटनीतिक स्तर की वार्ताओं का दौर जारी रहा। इंदिरा गांधी की मृत्यु के बाद राजीव गांधी ने अमेरिका के साथ राजनीतिक स्र पर सम्बन्ध मजबूत बनाने के प्रयास शुरू किये। 1986 में भी भारत–अमेरिकी सम्बन्धों में सुधार के कुछ प्रयास हुए। 9 अक्टुबर 1987 को भारत तथसा अमेरिका के बीच सुपर कम्प्यूटर समझौता हो जाने से यह तनाव कुछ ढीला हुआ। वर्ष 1988 के आरंभ में फिर से भारत–अमेरिका संबंधों को मजबूत बनाने के प्रयास शुरू किये गये। शीत युद्ध के समाप्ति के संकेत 1989 में ही दिखाई देने लगे थे शीत शुद्ध के अन्त तथा सोवियत संघ के विघटन ने अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में गुणात्मक परिवर्तन के संकेत दे दिये। इन घटनाओं का भारत–अमेरिका संबंधों पर सकारात्मक प्रभाव 1993 में जब बिल क्लिंटन अमेरिका के राष्ट्रपति बने तो उन्होंने भारत को परमाणु अप्रसार संधि तथा CTBT पर हस्ताक्षर करने, अपने प्रक्षेपात्र कार्यक्रम को स्थगित करने तथा जन्म कश्मीर और पंजाब में कथित मानवाधिकारों को सुधारने की दिशा में दबाव बढ़ाना शुरू किया।

लेकिन भारत ने इसकी कोई परवाह नहीं की। मई 1995 में प्रधानमंत्री नरसिम्हाराव अमेरिका की यात्रा पर गए इससे दोनों देशों के बीच सौहार्दपूर्ण वातावरण तैयार हुआ और व्यापार तथा वाणिज्य के क्षेत्र में कई समझौते हुए। 1996 में विदेश मंत्री तथा बाद में प्रधानमंत्री बनने के बाद इन्द्र कुमार गुजराल ने भी अमेरिका के साथ संबंध सुधारने की बात कही।

निष्कर्ष

भारत व अमेरिका की सबसे खास समानता यह है कि दोनों ही दुनिया के सबसे बड़ा एवं पुराने लोकतांत्रिक देश है सामरिक व शक्ति के संदर्भ में दोनों एक दूसरे के विपरीत है। भारत के स्वतंत्रता से वर्तमान तक अमेरिका के साथ संबंधों का मूल्यांकन करने से पता चलता है कि दोनों के संबंधों में हमेशा उतार–चढ़ाव की स्थिति रही है। दोनों के बीच मधुर सम्बन्धों का अभाव रहा है। समय के साथ–साथ बदलती हुई अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में कई बार आये तनाव और कडुवाहट। भारत ने संबंध सुधारने हेतु अनेकानेक प्रयास किये। एक संतुलन बना रहा जिसके कारण नई आशाएँ और नये क्षेत्रों में सहयोग ओर मैत्री की दिशा हमेशा मिलती रही।

संदर्भ

1. दीक्षित एन.जे., 2006, भारतीय विदेश नीति प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली।
2. कुमार डॉ0 राकेश, 2017, भारत–अमेरिका संबंध पोईंटर पब्लिशर्स, जयपुर।
3. वर्ल्ड फोकस जनवरी 2018 भारत की विदेश नीति भाग–1
4. सिंह के पंकज 2015 भारतीय विदेश नीति प्रकाशन संस्थान
5. दत्त वी0वी0 2015 बदलती दुनिया में भारत की विदेश नीति हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली।
6. बिस्वाल तपन, 2016 अंतर्राष्ट्रीय संबंध ओरियंट ब्लैकस्वॉन, नई दिल्ली।
7. किशोर डॉ0 जुगल 2019 भारत और विश्व प्रकाशक जैन विश्व भारतीय संस्थान
8. पाण्डेय के0आर0 2008 संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ग्रेट ब्रिटेन, चीन और भारती की विदेश नीति आस्था प्रिन्र्टस मेरठ।
9. https://www.examrace.com/currentaffairs
10. https://m.aajtak.in/now/national/story
11. https://www.dhyeyaias.in/current-affairs.